वैश्विक संस्कृति और भारतीय समाज

डॉ. निर्भय सिंह

हिन्दी विभाग,

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उपनिवेशों के विस्तार के लिए प्रमुख रूप से बिहार, उत्तर प्रदेश से श्रमिकों को अनुबंध तथा अपनी ही शर्तों के साथ सुनहरे सपने और प्रलोभनों के जाल में फँसाकर ले जाया गया । अकाल और गरीबी के कारण प्रवास इनकी विवशता थी, शोषण इनका भाग्य था, अतः सस्ते श्रमिक मनचाही शर्तों पर पानी के जहाज में भर-भरकर पशुओं की तरह ले जाए गए । कुछ अकेले और कुछ परिवार के साथ गए । गन्ने, चावल और कॉफी की खेती कराने के लिए इन पर अमानवीय अत्याचार, क्रूरतापूर्ण व्यवहार किए गए । लौटने का कोई विकल्प था ही नहीं । अतः कालांतर में इनकी तीन पीढ़ियाँ दासता की पीड़ा भोगती रहीं । इतनी निराशा, अवसाद, उत्पीड़न, कठोर जीवन, नारकीय दासता के जीवन के होने पर भी इन श्रमिकों के पूर्वजों ने भारतीय संस्कृति, संस्कार, भाषा, वेशभूषा, परिधान, आस्था के प्रतिमान देवी-देवता, रीति-रिवाज, भारतीय त्यौहार, लोकगीत, लोकथाएँ आदि सभी को सँजोए रखा। सूरीनाम, माॅरीशस, फिजी, त्रिनिडाड और गुयाना में गए हुए श्रमिक हजारों की संख्या में थे, अतः स्वाभाविक है कि वे आपसी बोलचाल हिंदी में ही करते थे। इन सबकी पीड़ा भी एक-सी थी । भाषा और भाव संक्रमित करते ही हैं, अतः जाने-अनजाने गन्ने, चावल और कॉफी की खेती के साथ मनोभूमि में हिंदी को भी बोते जा रहे थे । भाषा का प्रभाव परिवेश और वातावरण पर पड़ता ही है, अतः आगामी पीढ़ी बिना भारत में पैदा हुए ही हिन्दी भाषी हो गई । यह हिन्दी भाषायी तत्त्व आज भी गिरमिटिया देशों में हिन्दी के अस्तित्व को सींच रही है । भाषा वह ही जीवित रहती है जो जनसामान्य के द्वारा सामान्य प्रवाह से दैनिक जीवन में बोली

जाती है । गिरमिटिया देशों में हिन्दी का अस्तित्व इसलिए है कि आपस में बोलकर हिन्दी की जड़ों को जमाया गया है । इसका सारा श्रेय चार पीढ़ी पहले गए पूर्वजों को जाता है । अतः इनको नमन है और मोरिशस में प्रवासी घाट भी है जहाँ सबसे पहले गिरमिटिया का जहाज उतरा था । अनुबंधित श्रमिकों के समुदाय अपनी मूल भोजपुरी, अवधी और खड़ी बोली ही आपस में बोलते रहे, अतः आगामी पीढ़ी भी हिन्दी को आत्मसात् करती गई । विवशता के पत्थर इनके पंखों में बँधे थे किन्तु हृदय की आस्था पर तो किसी का राज नहीं चलता । वैसे भी पीड़ा में अंतर्मन को आस्था का मनोबल होता है। श्रीराम, श्रीकृष्ण, शिव जी और माँ दुर्गा की पूजा के संस्कार जन्म और परिवेश से इनके अंतस में थे । इन देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, पूजा की पारंपरिक वस्तुएँ, धार्मिक किताबे, रामायण और हनुमान चालीसा साथ ले गए जो इनके आस्थावान हृदय की शक्ति, सहारा और संबल थे । रामायण और हनुमान चालीसा के रूप में ये भारत की संस्कृति, संस्कार, सभ्यता और भाषा को साथ ले गए । प्रवास इनकी विवशता थी और विवशता कभी हर्षित नहीं करती, अतः यह अपनी मूल जड़ों से, संस्कारों से आत्मिक रूप से जुड़े रहे । एक तरह से विवशता से देह का प्रवास करते हुए ये अपना अंतर्मन यहीं छोड़ गए । उनकी उस पल की विवशता और पीड़ा से आज भी मन संवेदित होता है- बीज गला है तो वृक्ष पला है ।

उनके लिए भाव समर्पित

सरहदें देह की हैं, बिना देह का मन
जिसे चाहता है, वहीं पर रहेगा
यह तन एक पिंजरा, जहाँ चाहे रख लो
मन का पखेरू तो उड़कर रहेगा।

गिरमिट से गिरमिटिया शब्द की व्युत्पत्ति है और गिरमिट का अर्थ है- अनुबंध, शर्तों के आधार पर किया गया समझौता। गिरमिटिया देशों- अर्थात् वे देश जहाँ अनुबंध और शर्तों के आधार पर ले जाए गए लोग बसते हों। एक शब्द में ठेके पर ले जाए गए लोग गिरमिटिया कहलाए। ठेकेदार को केवल काम से मतलब होता है और यदि वह क्रूर निर्दयी और हृदयहीन हो तो वह अपने सभी नियमों और अनुबंध को तोड़कर अमानवीय स्तर पर भी आकर केवल काम से प्रयोजन रखते हैं। कम से कम पैसों में अधिक से अधिक काम-इस मनोवृत्ति में हृदयहीन, अमानवीय, क्रूर, हिंसक, स्वार्थी होते-होते भारत से गए सभी मजदूर दास बना लिए गए। इनके शोषण की जो पीड़ा उभरकर आई वह 'नरक' जैसी थी। जिसे एक गिरमिटिया कवि ने व्यक्त किया है -

छुरी कुदाली के संग बीते अब दिन रतियाँ
गन्ने की हरी-हरी पतियाँ, जाने हमारे दिल की बतियाँ।

गिरमिटिया हमसे कहीं अधिक भारतीय हैं जो गुलाम बनकर गए लेकिन मन को गुलाम नहीं होने दिया। हिंदी भाषा, भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कार चार पीढ़ियों को देते आ रहे हैं। सूरीनाम, माॅरीशस, फीजी, त्रिनिडाड और गुयाना में इन श्रमिकों ने अपनी मूल भाषा, संस्कृति और संस्कार को गर्व से थामे रखा। ये सब देह से वहाँ थे किन्तु मन से अपने देश और संस्कृति से जुड़े थे। 'हाथ से काम हृदय से राम' इन पर चरितार्थ हुआ। वहाँ गन्ने की खेती के साथ-साथ मन से, भाषा से, विचार से, व्यवहार से, भारतीय संस्कृति और संस्कार को भी जाने अनजाने वातावरण में वो रहे थे। जिसका ही परिणाम है कि हम भारत में रहकर भी अंग्रेजों के गुलाम आज तक हैं क्योंकि जिसकी मानसिकता और भाषा तक अपनी नहीं, उससे बड़ी दासवृत्ति और कौन-सी हो सकती है ? देवी और देवताओं की विश्वास और श्रद्धापूर्ण कथाएँ, राम, कृष्ण, सुदामा, धुरव, श्रवण, प्रहलाद और नैतिक

चरित्रों के नाट्य प्रदर्शन, ड्रामा, कहानियाँ, लोक गीत, लोक मान्यताएँ, राम लीलाएँ आदि का प्रदर्शन और श्रवण हिंदी में ही होता है । दशहरा, दिवाली, ईद का त्यौहार पूरे उत्साह और उमंग से मनाया जाता है । सत्संग और राम कथाओं का आयोजन भारत से संतों को बुलाकर किया जाता है । यह हिन्दी की अस्मिता को आत्मसात् करने के प्रणम्य प्रमाण हैं ।

इन गिरमिटिया देशों में अनेक रेडियो प्रोग्राम हिंदी में ही प्रसारित होते हैं। लोकगीत, मंदिर में आरती-भजन, शादी के गीत सब हिंदी में ही गाए जाते हैं । माॅरीशस के आर्य समाज के प्रति आस्था और समर्पण को देखकर तो ऋषि दयानंद भी मुदित हो जाते । वेदों, उपनिषदों केप्रति, आस्था प्रणम्य है । हिंदी को आत्मसात किए गिरमिटिया का आकलन करने का सबसे प्रबल पक्ष है- नामकरण । इनके बच्चों के नाम अधिकतर देवी, देवताओं या सात्विक सरल भाव पर आधारित हैं । जैसे-रामचरण, रामगुलाम, कन्हैया, भगवानदास, जानकी, माया, मोहिनी, पद्मा, उमा, पार्वती, सीता, राधा, धर्मवीर, महावीर, लक्ष्मण, भरत, देवी दास आदि जो इनके हिंदी प्रेम को सिद्ध करते हैं और अंतर्मन की आस्था के प्रमाण हैं । विवाह गीत भी हिंदी के लोक गीत, राम-सीता, की शादी का मांगलिक आधार लेकर पारंपरिक ढोलक, मँजीरा और घुँघरूके साथ ही गाए जाते हैं । शादी के रीति-रिवाज भी पूर्ण भारतीय हैं । लगभग सभी घरों में मंदिर हैं और रामायण को पढ़ना, हनुमान चालीसा का पाठ अधिकांश लोगों की दिनचर्या है । हिंदी की अस्मिता और अस्तित्व के ये प्रवासी सच्चे संवाहक हैं । इन्हें हिंदीभाषी होने का गर्व है । भारत सरकार की ओर से भी इनके महत्व, अस्तित्व और कृतित्व को स्वीकारा गया है । प्रवासी दिवस-प्रतिवर्ष इन प्रवासियों के सम्मान में ही आयोजित किया जाता है । प्रति चार वर्षो में आयोजित किए जाने वाले 'विश्व सम्मेलन' का प्रयोजन भी हिंदी के अंतराष्ट्रीय विकास और हिंदीभाषा को प्रगाढ़ और एक-दूसरे को यथासंभव निकट लाना है। इस श्रृंखला में पहला

विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी को नागपुर में आयोजित किया गया।दूसरे 'विश्व सम्मलेन' का आयोजन माॅरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में 28 अगस्त से 31 अगस्त तक 1976 में हुआ । उस समय माॅरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. सर शिवसागर रामगुलाम थे । तीसरा सम्मेलन भारत की राजधानी दिल्ली में 28 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 1983 में हुआ । चैथा 'विश्व हिंदी सम्मलेन' एक बार फिर दो दिसंबर से चार दिसम्बर 1993 को माॅरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में संपन्न हुआ । 17 वर्षो के बाद एक बार पुनः 'विश्व हिंदी सम्मलेन' का आयोजन गिरमिटिया देश का हिंदी के प्रति गहरी निष्ठा, आस्था और भावनात्मक जुड़ाव का प्रत्यक्ष परिचायक और प्रमाण है ।पाँचवें 'विश्व हिंदी सम्मलेन' का आयोजन त्रिनिडाड और टोबेगो की राजधानी पोर्ट ऑफ़ स्पेन में चार अप्रैल से आठ अप्रैल 1996 में हुआ और संस्था थी-त्रिनिडाड की हिंदी निधि । सातवाँ 'विश्व हिंदी सम्मलेन' सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में पाँच जून से आठ जून 1983 को आयोजित किया गया। यह भी एक संयोग ही था कि पाँच जून को ही सूरीनामी नदी के तट पर सर्वप्रथम भारतवासी आए थे । गिरमिटिया देशों द्वारा आयोजनों में सहभागिता और उमंग उनकी हिंदी के प्रति आस्था, लगाव, रूचि, समर्पण और अंतर्मन के जुड़ाव का प्रमाण और परिचायक है । विश्व हिंदी सम्मलेन के प्रत्येक आयोजनों में गिरमिटिया देशों का योगदान, उपस्थिति और रूचि अन्य देशों की अपेक्षा कहीं अधिक होता है । हिंदी के प्रति प्रगाढ़ प्रेम और भावनात्मक लगाव के लिए गिरमिटिया देशों को नमन है ।

सन्दर्भ-

1.हिन्दी का इतिहास, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

2.विश्व भाषा हिन्दी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

3.हिन्दी विश्व सम्मेलन अंक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

4.हिन्दी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ- डॉ. भोलानाथ तिवारी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

5.हिन्दी के विकास में विदेशी विद्वानों का योगदान, डॉ. जोस आस्टिन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

6.स्मारिका, पाँचवा विश्व हिन्दी सम्मेलन, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

7.स्मारिका, दंशवा विश्व हिन्दी सम्मेलन, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पर्क सूत्र.

9452798624/ 7078889333